फैसला

आप कुछ देखते ही: यह अच्छा है, वह बुरा है; यह मुझे पसंद है, वह मुझे पसंद नहीं है; मैं इस व्यक्ति को पसंद करता हूं, उस व्यक्ति को पसंद नहीं करता हूं; मैं ऐसा ही हूं, मेरा शरीर ऐसा ही है, मेरा मन ऐसा ही है, वह ऐसा ही है कभी नहीं बदलेगा, इस तरह आप फैसला करते रहते है। इस तरह करने से, अपने आप को और दूसरों को भी आप निर्बंध कर रहे है। तब आप रोबो या वस्तु की तरह तैयार हो जाते है। इसकी वजह से नयापन आपके जीवन में प्रवेश नहीं करेगा, और आप संपूर्ण नए रूप में परिवर्तित होकर, पिछले कर्मों से स्वतंत्रता प्राप्त करने का अवसर खो देंगे।

इस तरह आप यह बुरा आदमी है, मुझे पसंद नहीं, ऐसा फैसला करके नफरत करने के तुरंत ही, वह कर्म आपसे चिपक जाता है और जो आप नफरत करते हैं, वही आपके जीवन में होने लगते है। वे गुण आपको कस के पकड़ कर पीड़ित करते है। ऐसा करना गलत नहीं है। आपको लगा कि वे सही नहीं है और गलत कर रहे हैं, इसलिए आपने इस तरह का फैसला लिया। वे सही किया है, हर एक गुण के बारे में अनुभवपूर्वक जान रहे हैं, उनके आंतरिक स्थिति के अनुसार ही कर रहे हैं, वे आंतरिक स्थिति और किस्मत के गुलाम हैं और वे उनसे परे नहीं हैं, आप इस बात को ना समझते हुए फैसला कर रहे है। अगर आप इस फैसला लेने की आदत को जारी रखें तो आपको मुश्किलों का सामना करना पड़ेगा। क्योंकि आपके अंदर भी वही बुरे गुण हैं जिन्हें आप नफरत करते है।

ज्यादातर लोगों को लगता है कि फैसला करना गलत है। लेकिन आपको समझना होगा कि हर एक मामले में आपको कुछ ना कुछ फैसला अनिवार्य से करना होगा। यह अच्छा है, यह बुरा है, दोनों फैसला ही हैं। आप जो भी कहते है, वह फैसला ही होगा, इसलिए आप फैसला किए बिना रहना असंभव है, लेकिन फैसला करने से अच्छा कर्म या बुरा कर्म आपको चिपक जाता है। तो फैसला करने के बावजूद भी कर्म ना चिपकने के लिए क्या करना है?

इसका समाधान, आप के फैसला को स्थगित करना। वर्तमान में मुझे यह गुण पसंद नहीं है, लेकिन अभी मैं फैसला नहीं करूंगा, अभ इस गुण को बुरा मानकर स्थिर अभिप्राय में ना रहते हुए, इस गुण के बारे में और गहराई से जानने के बाद ही निर्णय करूंगा, ऐसा कहकर फैसला को स्थगित कीजिए। इस तरह करने से आप खुले दिमाग और खुले दिल से रहेंगे। तभी आपको उनके बारे में गहरी समझ प्राप्त होगा। अगर आप बंद दिमाग से फैसला लेना जारी रखेंगे तो यह स्वयं अपने आप को नियंत्रण करने का सामान है। इसकी वजह से आप मौजूद स्थिति में ही रह जाएंगे।

इस तरह स्थगित करके, यह गुण दिव्यत्व में एक हिस्सा है, यह भी दैविक है, इस बात को जानने की संकल्प करके, उसके बारे में ही सोचिए। उस गुण के कारण आपको और इस सृष्टि को जो अच्छा हो रहा है उसके बारे में पता लगाइए। क्योंकि विश्व में सब कुछ आपस में जुड़े हुए हैं, हर एक क अपना अपना स्थान है, इसलिए हम किसी को भी तिरस्कार नहीं

कर सकते। स्वयं परमात्मा ने ही उसे स्वीकार करके उसे एक स्थान दिया है, इसे अस्वीकार करने के लिए हम कौन है। विश्व की योजना में इसका स्थान क्या है, इसे समझने की कोशिश करनी चाहिए।

हर एक गुण में मदद करने की तत्व और तंग करने की तत्व को आप पहचानिए। तभी आपके अंदर हर चीज के प्रति समान भावना पैदा होगा। लेकिन आपमें रहने वाले सारे गुण को जैसे है वैसे ही स्वीकार करके, उन्हें परमात्मा के प्रसाद की तरह मानकर, उन्हें दिव्य से अनुभव करके, अच्छे-बुरे सभी दिव्य शक्ति है, इसे आप अनुभव पूर्वक जानने तक, फैसला करते रहेंगे। इस तरह यदि आप उन पर ध्यान केंद्रित करते हुए उन्हें अनुभव करके समझने की कोशिश करेंगे तो, निश्चित रूप से सभी गुण दिव्य है, यह बात जानने में आप विजय हासिल करेंगे।

तभी आप हर एक गुण को डांट सकते है और तुरंत ही प्रशंसा भी कर सकते है। नफरत कर सकते है और तुरंत ही इसे प्यार भी कर सकते है। इस तरह यदि आप डांट-प्रशंसा-तटस्थ-और दिव्य से देख सके तो, यह संकेत है कि आपने सबको पूरी तरह से समझ चुके हैं, अन्यथा आप अपूर्ण रह जाएंगे। यदि आप किसी चीज को डांटने या प्रशंसा नहीं कर सके तो उसे पहचानें और फैसला स्थगित करें।

इस तरह संपूर्ण-स्थिति को पहुंचने के बाद ही, आप फैसला ना करते हुए हर एक को दिव्य से देख सकते है। तभी समस्या बाहरी रूप लेने के बजाय अदृश्य हो जाता है। इस तरह हर एक के लिए ऐसा ही कीजिए। तभी आप प्रेम, करुणा और दिव्यता से भर जाएंगे।

एक और बात यह है कि, आमतौर पर हम यह व्यक्ति अच्छा है या बुरा है कह कर फैसला करते है। इसी तरह से "मैं गलत हूं - आप सही है", या "आप गलत है - मैं सही हूं" कहकर फैसला करते है। तब हमें लगता है कि जो व्यक्ति जिसने गलत की है उसे ही बदलना होगा। लेकिन इसकी वजह से जो व्यक्ति जिसने सही की है वह विकसित ना होते हुए अहंकार को बढ़ाते हुए, उसी स्थिति में रह जाएंगे। इस तरह सही-गलत के द्वंद्व स्थिति को पोषण करने से ही आप राग-द्वेष में फस जा रहे है। इस तरह आप पक्षपात स्वभाव में रहते हुए फैसला करने से ही आपका विकास नहीं हो रहा है। यदि आप ऐसा करना जारी रखे तो, समदृष्टि जो दैविक गुण है आपमें कभी भी संभव नहीं होगी।

इसलिए न्यूएनर्जी कॉन्सेप्ट का अनुसरण करना चाहते है तो आपको एक ऐसा स्थिति को पहुंचना होगा जहां आप मान सकते है कि, दोनों गलत हैं या दोनों सही हैं। जब आप कहते है कि दोनों गलत हैं, तब दोनों को बदलना होगा। वैसे ही जब आप कहते हैं कि दोनों सही हैं, तब भी दोनों को विकसित होना हैं, क्योंकि ज्ञान अनंत है, और शक्ति हमेशा प्रवाहित होते हुए विकसित होता है।

लेकिन कई लोग मुझे पूछ रहे हैं कि: वे साधना करने में विफल हो रहे हैं, साधना को भूल रहे हैं, साधना करने का संकल्प रखने से भी, अंदर उत्साह नहीं आ रहा है, क्या करना है। इसके लिए मेरा सुझाव यह है कि, आपको खुद को दंड देना होगा। आपको स्वयं ही गुरु

और शिष्य बनना होगा। आप एक गुरु की तरह रहते हुए आपमें रहने वाला शिष्य को साधना बताकर इसे अनिवार्य से अभ्यास करने की आदेश दीजिए। अन्यथा बताइए कि उन्हें सजा मिलेगा।

उसके बाद आपको शिष्य बन कर, साधना करने की कोशिश करना है। अगर आपको लगता है कि आप ठीक से नहीं कर रहे है या साधना को भूल रहे है तो क्षमायाचना के लिए अपने आपको छोटे-छोटे सजा दीजिए। अर्थात उपवास रहना, व्यायाम करना, लंबे समय तक ध्यान करना, पसंदीदा टीवी कार्यक्रम को ना देखना, नापसंद कार्यक्रम को देखना इस तरह के दंड अपने आपको देते हुए, उनके द्वारा उत्पन्न होने वाला दुख को जागरूकता में रहते हुए अनुभव कीजिए। तब आपमें उत्साह बढ़ने का संभावना है। यह सुझाव मैं आपको दे रहा हूं। उत्साह बढ़ाने के लिए आप कुछ और करना चाहते हैं तो उसे भी करके देखिए।

** यह ज्ञान तेलुगु भाषा से अनुवादित है। तेलुगु या अन्य भाषाओं में यह ज्ञान पढ़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें **http://darmam.com/library.html**

दान

न्यूएनर्जी-अद्वैत ज्ञान से प्रेरित कोई व्यक्ति या कोई भी, दान करना चाहता है, तो कृपया निम्नलिखित बैंक खाते में पैसा जमा करें। आपकी मदद हमें इस ज्ञान को बहुत सारे लोगों तक फैलाने के लिए प्रोत्साहित करेगी। Name: P.Sreedhar; SBI Bank A/c No: 30603897922. Branch: Hanamkonda; City: Hanamkonda, Warangal District, India. IFSC Code: SBIN0003422 Mobile No: 9390151912. आपकी उदारता और समर्थन की सराहना की जाती है! This mobile No. also has GooglePay and PhonePe.